राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर (उ0प्र0)

(नैक तृतीय चक्र पूर्ण)

उच्च शिक्षा विभाग द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के मिशन शक्ति कार्यक्रम (द्वितीय चरण) के अन्तर्गत

मिशन शक्ति
नारी सुरक्षा
नारी सम्मान
नारी स्वावलंबन

विषय:- पुरातन भारतीय कलाओं द्वारा महिलाओं का कौशल विकास

दिनांक : 18/12/2020

समय : 2:00-3:00 बजे अपराह्न

डॉ0 पी0के0 वार्ष्णेय
प्राचार्य / संरक्षक

डॉ0 अरुण कुमार
समन्वयक

कार्यक्रम विवरण

(दिनांक : 18/12/2020 समय : अपराहन 2 बजे से 3 बजे तक)

क्र0 संख्या	कार्यक्रम विवरण	वक्ता
1	कार्यक्रम परिचय / संचालन	डॉ0 बेबी तबस्सुम
2	आख्या प्रस्तुतिकरण	डॉ0 सुमनलता
3	शुभारंभ की घोषणा एवं आशीर्वचन	डॉ0 विनीता सिंह
4	मुख्य वक्ता	डॉ0 अनिल राय प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
5	विशिष्ट वक्ता	डॉ0 वी0 के0 राय
6	धन्यवाद ज्ञापन	डॉ0 अरुण कुमार

संयोजक:- डॉ0 बेबी तबस्सुम
आयोजक:- डॉ0 अरुण कुमार
रिपोर्ट संकलन एवं सम्प्रेषण:- डॉ0 राजीव पाल

Web link to join
https://meet.google.com/ktp-oeyt-yxo

GOVT. RAZA POST GRADUATE COLLEGE, RAMPUR

Re-Accredited 'B' by NAAC

Affiliated by M.J.P rohilkhand University, Bareilly

वेबिनार आख्या

कार्यालय ,राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर ,उ0प्र0

दिनाँक**: 18/12/2023**

आज दिनांक 18.12.2020 को अपराह्न 2:00 से 3:00 बजे तक राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर में उत्तर प्रदेश शासन के मिशन रोजगार एवं मिशन शक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत "**पुरातन भारतीय कलाओं द्वारा महिलाओं का कौशल विकास**" शीर्षक पर एक ऑनलाइन ई-संगोष्ठी/वेबीनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के संरक्षक प्राचार्य डॉ पी के वार्ष्णेय के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में हुआ। इस अवसर पर प्राचार्य ने बताया कि मिशन शक्ति कार्यक्रम शारदीय नवरात्र से आरम्भ होकर ग्रीष्म नवरात्र तक आयोजित होगा।

ऑनलाइन संगोष्ठी शुभारंभ की घोषणा करते हुए डॉ. विनीता सिंह ने कहा कि, पुरातन भारतीय कलाओं का भारतीय समाज के विकास में अविस्मरणीय योगदान रहा है। भारत की महिलाओं को पुरातन कलाओं के द्वारा कौशल एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। नृत्य कला, पाक कला और कड़ाई बुनाई सिलाई जैसी कला को सीखकर अपने को सशक्त बना सकतीं हैं।

मुख्य वक्ता **डॉ. अनिल राय प्रोफ़ेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय**, ने इस संगोष्ठी में अपने संबोधन में कहा कि, प्राचीन भारतीय समाज में कला, संगीत और साहित्य को समान स्थान प्राप्त था। कला साहित्य और संगीत के बिना व्यक्ति पशुतुल्य होता है। 64 भारतीय पुरातन कलाओं का जिक्र करते हुए डॉक्टर अनिल राय ने कहा कि नृत्य कला भारती पुरातन कलाओं में सबसे महत्वपूर्ण कला है प्राचीन समय से लेकर आज तक नृत्य कला का महत्व बढ़ता ही जा रहा है महाभारत काल में अर्जुन नृत्य कला के रूप में पारंगत थे। वहीं मंदिरों में नृत्यांगनाएं रखी जाती थी।आज भी अनेक महिलाएं भारत की जानी-मानी नृत्यांगनाएं हैं । और समूचे विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त कर रही हैं। नाट्यकला भी भारतीय पुरातन कला में दूसरी महत्वपूर्ण कला है जिसमें आधुनिक समय की महिलाओं ने बहुत नाम कमाया है। नाटक क्षेत्र में आज महिलाएं अभिनेत्री, फिल्म निर्देशिका एवं फिल्म निर्माता के रूप में अपने गौरवमयी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। वास्तु कला के क्षेत्र में भी आभा नारायण लांबा और शीला श्रीप्रकाश ने बहुत प्रसिद्धि की है। यह दोनों महिला स्थापत्यकार दुनिया के 100 बड़े स्थापत्यकारों की सूची में शामिल है। गायन कला के क्षेत्र में लता मंगेशकर, आशा भोंसले, अनुराधा पौडवाल, अलका याग्निक, श्रेया घोषाल, अलीशा चिनॉय, कविता कृष्णमूर्ति और नेहा कक्कड़ इत्यादि भारतीय महिलाओं ने खूब प्रसिद्धि बटोरी है।रितु बेरी और रितु कुमार जैसी भारतीय महिलाएं वस्त्र आभूषण सज्जा कला में पारंगत होकर आर्थिक रूप से सशक्त बन गई हैं, जबकि पाली नंदा, मेघा कोहली और ऋतु डालमिया इत्यादि भारतीय महिला भारत की जानी-मानी पाककला पारंगत शख्सियत हैं। आज ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं इन महिलाओं से प्रेरित होकर अपने आप को सशक्त बना सकती हैं।

विशिष्ठ वक्ता डॉ. वी के राय ने संगोष्ठी में प्राचीन सिंधु सभ्यता का जिक्र करते हुए बताया कि कला वह है जो किसी को भी आनंदित करें। सैंधव सभ्यता में नृत्य कला का प्रमाण मिलता है। मृदभांड कला महिलाओं को रोजगार का अवसर प्रदान करती थी। सैंधव सभ्यता में मिट्टी के बर्तन बनाने की कला सैंधव सभ्यता महिलाओं की प्रमुख कला थी, जिससे वह अपना जीवकोपार्जन करती थी। आज इस कला को नए तरीके से प्रोत्साहित करके रोजगार सृजन किया जा सकता है।

इस ऑनलाइन संगोष्ठी का संचालन डॉ. बेबी तबस्सुम ने किया। गत कार्यक्रम की आख्या का प्रस्तुतीकरण डॉ. सुमनलता ने किया। और सभी सभी अतिथि वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अरुण कुमार ने किया।

"पुरातन भारतीय कलाओं द्वारा महिलाओं का कौशल विकास" शीर्षक पर ऑनलाइन ई-संगोष्ठी का हुआ आयोजन। http://www.jadidnews.in/organized-online-e-seminar-titled-skill-development-of-women-by-ancient-indian-arts/

GOVT. RAZA POST GRADUATE COLLEGE, RAMPUR

Re-Accredited 'B' by NAAC

Affiliated by M.J.P rohilkhand University, Bareilly

रज़ा पी जी कालेज में महिलाओं का कौशल विकास शीर्षक पर एक ऑनलाइन ई-संगोष्ठी/वेबीनार का आयोजन

अ.हि.ब्यूरो,रामपुर। आज राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर में उत्तर प्रदेश शासन के मिशन रोजगार एवं मिशन शक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत पुरातन भारतीय कलाओं द्वारा महिलाओं का कौशल विकास शीर्षक पर एक ऑनलाइन ई-संगोष्ठी/वेबीनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के संरक्षक प्राचार्य डॉ पी के वार्ष्णेय के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में हुआ। इस अवसर पर प्राचार्य ने बताया कि मिशन शक्ति कार्यक्रम शारदीय नवरात्र से आरम्भ होकर ग्रीष्म नवरात्र तक आयोजित होगा।

ऑनलाइन संगोष्ठी शुभारंभ की घोषणा करते हुए डॉ. विनीता सिंह ने कहा कि, पुरातन भारतीय कलाओं का भारतीय समाज के विकास में अविस्मरणीय योगदान रहा है। भारत की महिलाओं को पुरातन कलाओं

के द्वारा कौशल एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। नृत्य कला, पाक कला और कड़ाई बुनाई सिलाई जैसी कला को सीखकर अपने को सशक्त बना सकतीं हैं।

मुख्य वक्ता डॉ. अनिल राय प्रोफ़ेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, ने इस संगोष्ठी में अपने संबोधन में कहा कि, प्राचीन भारतीय समाज में कला, संगीत और साहित्य को समान स्थान प्राप्त था। कला साहित्य और संगीत के बिना व्यक्ति पशुतुल्य होता है। 64 भारतीय पुरातन कलाओं का जिक्र करते हुए डॉक्टर अनिल राय ने कहा कि नृत्य कला भारती पुरातन कलाओं में सबसे महत्वपूर्ण कला है प्राचीन समय से लेकर आज तक नृत्य कला का महत्व बढ़ता ही जा रहा है उन्होंने कला साहित्य और संगीत पर तफसील से रोशनी डाली।हैं।

विशिष्ठ वक्ता डॉ. वी के राय ने संगोष्ठी में प्राचीन सिंधु सभ्यता का जिक्र करते हुए बताया कि कला वह है जो किसी को भी आनंदित करें। सैंधव सभ्यता में नृत्य कला का प्रमाण मिलता है।

इस ऑनलाइन संगोष्ठी का संचालन डॉ. बेबी तबस्सुम ने किया। गत कार्यक्रम की आख्या का प्रस्तुतीकरण डॉ. सुमनलता ने किया। और सभी सभी अतिथि वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अरुण कुमारने किया।

घने कोहरे के साथ कड़कड़ाती गलन वाली सर्दी का सितम जारी

कौशल विकास शीर्षक पर ऑनलाइन ई-संगोष्ठी

अमृत विचार, रामपुर

आयोजन

- **पुरातन भारतीय कलाओं का विकास में अविस्मरणीय योगदान**
- **कला साहित्य और संगीत के बिना व्यक्ति पशुतुल्य**

राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश शासन के मिशन शक्ति कार्यक्रम के अंतर्गत पुरातन भारतीय कलाओं द्वारा महिलाओं का कौशल विकास शीर्षक पर ऑनलाइन ई-संगोष्ठी हुई। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के संरक्षक प्राचार्य डा.पीके वार्ष्णेय के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में हुआ।

मिशन शक्ति कार्यक्रम शारदीय नवरात्र से आरम्भ होकर ग्रीष्म नवरात्र तक आयोजित होगा। आनलाइन संगोष्ठी शुभारंभ की घोषणा करते हुए डा.विनीता सिंह ने कहा कि, पुरातन भारतीय कलाओं का भारतीय समाज के विकास में अविस्मरणीय योगदान रहा है। भारत की महिलाओं को पुरातन कलाओं के द्वारा कौशल एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है। मुख्य वक्ता डा.अनिल राय प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय,ने इस संगोष्ठी में अपने संबोधन में कहा कि प्राचीन भारतीय समाज में कला, संगीत और साहित्य को समान स्थान प्राप्त था। कला साहित्य और संगीत के बिना व्यक्ति पशुतुल्य होता है। 64 भारतीय पुरातन कलाओं का जिक्र करते हुए डाक्टर अनिल राय ने कहा कि नृत्य कला भारतीय पुरातन कलाओं में सबसे महत्वपूर्ण कला है। प्राचीन समय से लेकर आज तक नृत्य कला का महत्व बढ़ता ही जा रहा है महाभारत काल में अर्जुन नृत्य कला कल में पारंगत थे। वास्तु कला के क्षेत्र में भी आभा नारायण लांबा और शीला श्रीप्रकाश ने बहुत प्रसिद्धि की है। यह दोनों महिला स्थापत्य कला के 100 बड़े नामो की सूची में शामिल है। गायन कला के क्षेत्र में भारतीय महिलाओं ने खूब प्रसिद्धि बटोरी है। रितु बेरी और रितु कुमार जैसी भारतीय महिलाएं वस्त्र आभूषण सज्जा कला में पारंगत होकर आर्थिक रूप से सशक्त बन गई हैं। इस आनलाइन संगोष्ठी का संचालन डा.बेबी तबस्सुम ने किया।गत कार्यक्रम की आख्या का प्रस्तुतीकरण डा.सुमनलता ने किया। सभी अतिथि वक्ताओं एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद डा.अरुण कुमार ने किया।

Principal
Govt. Raza P.G. College
Rampur (U.P.)